P.G.
SEM-II
Paper-9

बाणभट्ट की आत्मकथा

-आचार्य हजारी प्र० द्वि०

प्र० उपन्यास कला की दृष्टि से बाणभट्ट की आत्मकथा की समीक्षा कीजिए।

उत्तर → आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी एवं संस्कृत के प्रकांड पंडित होने के साथ ही कोमल मानवीय अनुभूतियों के भी मर्मज्ञ हैं। समीक्षक के रूप में जहाँ उनके गंभीर चिंतन एवं पांडित्य की झलक मिलती है, वहीं उपन्यासकार के रूप में ऐतिहासिक शोध एवं उसके भीतर का मानव मन मंथन को उजागर करने में वे सिद्धहस्त हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में इतिहास के भीतर का इतिहास तो उद्घाटित किया ही है, साथ ही मानव-चरित्र की विविधताओं का गंभीर वर्णन प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने प्रथम प्रकाशित उपन्यास "बाणभट्ट की आत्मकथा" से लेकर अंतिम उपन्यास 'अनामदास का पोथा' तक के इतिहास के परिपेक्ष्य में मनुष्य के भीतर इतिहास को वाणी दी है। उनका प्रत्येक उपन्यास अपने आप में हिन्दी उपन्यास जगत की एक घटना है।

कथानक :- "बाणभट्ट की आत्मकथा' अपनी समस्त औपन्यासिक संरचना और कथाकृति होते हुए भी महाकाव्य की गरिमा से पूर्ण है। इसमें द्विवेदी जी ने प्राचीन कवि बाण के बिखरे जीवन सूत्रों को बड़ी कलात्मकता से गूँथकर एक ऐसी कथाभूमि निर्मित की है जो जीवन सत्यों से रसमय साक्षात्कार कराती है। इसमें वह वाणी मुखरित है जो सामगान के समान पवित्र और अर्थपूर्ण है। सत्य के लिए किसी से न डरना, गुरु से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं; वेद से भी नहीं। इस उपन्यास का कथानायक कोरा भावुक कवि नहीं अपितु कर्मनिरत और संघर्षशील जीवन योद्धा है। उसके लिए शरीर केवल भार नहीं, मिट्टी का ढेला नहीं अपितु उससे भी बड़ा है और उसके मन में आर्यावर्त के उद्धार के निमित्त कुछ करने की तीव्र बेचैनी है। अपने को विशेष भाव से दे देने में जीवन की सार्थकता देखनेवाली निउनिया और सब कुछ भूल जाने की साधना में लीन महादेवी भट्टिनी के प्रति बाणभट्ट के मन में उच्चता का भाव है। इस उपन्यास में भट्टिनी का यह कथन कि -"इस नर लोक से लेकर किन्नर लोक तक रागात्मक हृदय व्याप्त है"। द्विवेदी जी के सभी उपन्यासों का मूल

व्याप्त हैं स्वर है। ऐतिहासिक दृष्टि से इस उपन्यास की कथा का संबंध हर्षवर्धन कालीन भारत से है। अनेक ऐतिहासिक और प्रामाणिक चरित्रों के अतिरिक्त इसमें अनेक काल्पनिक चरित्रों की भी सृष्टि की गयी है। जो इस उपन्यास के व्यापक कथा क्षेत्र के सूत्रधार हैं।

चरित्र चित्रण :— द्विवेदी जी के उपन्यासों में कथा वस्तु का विकास पात्रों के माध्यम से किया जाता है कथावस्तु के अनुकूल पात्रों का संयोजन कर उनकी आकृति प्रकृति, मनःस्थिति, विचार अनुभव आदि का सजीव चित्रण करना, उनको जीवन के अनुकूल और सप्राण बनाना द्विवेदी जी की पात्र योजना की विशेषता है। उनके पात्रों में विविधता है। चरित्र चित्रण में सूक्ष्म पर्यवेक्षण है और मानव मन की गहराइयों में बैठकर आंतरिक उद्गारों को अभिव्यक्त करने की अपूर्व क्षमता है। "बाणभट्ट की आत्मकथा" उपन्यास के बाणभट्ट निपुणिका भट्टिनी महामाया सुचरिता, हर्षवर्द्धन एवं धावनीस्मता आदि पात्र नितांत सजीव आकर्षक, मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। कुमार कृष्णवर्धन के प्रभावक चरित्र का वर्णन भी यहाँ किया गया है।

चरित्र चित्रण में अंतर्द्वन्द्व का चित्रण द्विवेदी जी की कला की एक प्रमुख विशेषता है। बाणभट्ट की आत्मकथा इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। इसमें बाणभट्ट का अंतर्द्वंद्व आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों से प्रेरणा लेकर और भी सजीव हो उठा है। साथ ही भट्टिनी निपुणिका सुचरिता आदि की आंतरिक स्थितियों का भी सुन्दर चित्रण हुआ है।

संवाद अथवा कथोपकथन :— कथा के विकास पात्रों की गति मानसिक स्थिति वातावरण के उभार और पृष्ठभूमि के अभिव्यक्तिकरण में संवादयोजना का विशेष महत्व है। द्विवेदी जी के संवाद भी इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। "बाणभट्ट की आत्मकथा" उपन्यास में संवादगत स्वाभाविकता और सजीवता का गुण सर्वत्र उपलब्ध है। इस उपन्यास के संवादों की सबसे बड़ी विशेषता है इसमें निहित मनोवैज्ञानिक

उदाहरणार्थ बाणभट्ट और कुमारवर्द्धन की मनःस्थिति का यथार्थपरक अध्ययन से पूर्ण प्रस्तुत संवाद —

"क्या करते हो नरर सोच समझकर बोलो।"

सोच लिया है कुमार।

कुमार के क्रोध कषायित नयनों में थोड़ी और हलचल हुई बोले तुम्हें मालूम है तुम किससे यह बात कह रहे हो? जरा भी अभिभूत हुए बिना मैंने कहा - मैं कान्यकुब्ज साम्राज्य के महासंधि विग्राहिक कृष्णवर्धन से बातें कर रहा हूँ। दुर्विनीत है नट्ट कुमार से ऐसी बात सुनने की मुझे आशा न थी।

प्रस्तुत संवाद में कुमार कृष्णवर्धन के राजसी मद और गौरव के साथ ही बाणभट्ट के चरित्र में व्याप्त साहस निर्भिकता, स्पष्टवादिता एवं न्यायाकांक्षी की स्पष्ट झलक है।

देशकाल और वातावरण :- द्विवेदी जी के उपन्यासों में युगीन देशकाल और वातावरण विशेष रूप से मुखरित हुआ है। बाणभट्ट की आत्मकथा उपन्यास में ऐसी सूक्ष्म और समर्थ वातावरण प्रस्तुत किया गया है जो औपन्यासिक कथावस्तु की यथार्थता को सजीव बना देता है। युगानुकूल वेशभूषा, अलंकरण, भाषा एवं आचार व्यवहार तथा राजनीतिय परिवेश की उपन्यास में यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में हर्षवर्धन कालीन संपूर्ण नगर एवं राजनीतिय बाह्य परिवेश की उपन्यास में यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में हर्षवर्धन कालीन संपूर्ण नगर एवं राजनीतिय बाह्य परिवेश उनके उत्सव आदि तथा स्थानीय प्रकृति के बाह्य वातावरण को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

5. भाषा शैली :- 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास की भाषा युगीन परिवेश को प्रस्तुत करनेवाली, पात्रानुकूल तथा देशकाल की स्थिति के सर्वथा उपयुक्त एवं अनुकूल है। उनकी भाषा, कथा के प्रवाह, पात्रों की योजना तथा वातावरण की स्वाभाविकता में पूरा सहयोग देती है। संवादों की भाषा में तो

देशकाल का रंग है ही, कथा वर्णन और पात्रों की रूपरेखा प्रस्तुत करने में भी लेखक की भाषा देशकाल से प्रभावित और वातावरण के अनुरूप है। द्विवेदी जी की शैली कहीं तो विवरणात्मक है और कहीं विश्लेषणात्मक जहाँ पर गहन चिंतन है वहाँ पर भी भाषा गंभीर और प्राय: क्लिष्ट संस्कृत प्रधान है लेकिन जहाँ स्वाभाविक वार्तालाप है, वहाँ भाषा भी सरल स्वाभाविक है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखित है।

उद्देश्य! — द्विवेदी जी के लेखन का प्रमुख उद्देश्य विश्व मानववाद के प्रति आदर्शात्मक दृष्टिकोण है और उसके लिए सामाजिक और व्यक्तिगत परिस्थितियाँ प्रस्तुत करते हैं। यहाँ द्विवेदी जी ने नारी का बलात अपहरण करके उस युग में नारी को किस प्रकार का जीवन जीने को विवश किया जाता था, इसका भी उदाहरण उपन्यास की नायिका भट्टिनी के माध्यम से दिया है।

डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज